सूरह — एक कहानी

सूरह अन-नास

इंसान

पूरा सफ़र — आख़िरी सूरह, आख़िरी पनाह —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 114 • 6 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

क़ुल अ'ऊज़ु बि-रब्बिन्-नास
1. कह दीजिए: मैं पनाह माँगता हूँ इंसानों के रब की।

मलिकिन्-नास
2. इंसानों के बादशाह की।

इलाहिन्-नास
3. इंसानों के मा'बूद की।

मिन शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नास
4. उस वसवसा डालने वाले के शर से जो पीछे हट जाता है।

अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्-नास
5. जो लोगों के सीनों में वसवसा डालता है।

मिनल्-जिन्नति वन्-नास
6. जिन्नों में से भी और इंसानों में से भी।

किताब का आख़िरी लफ़्ज़

बेटा, यह क़ुरआन की सबसे आख़िरी सूरह है। सोचिए — अल्लाह ने अपनी किताब का इख़्तिताम किस चीज़ पर किया? किसी हुक्म पर नहीं, किसी धमकी पर नहीं। एक दुआ पर — कि ऐ अल्लाह, मुझे अपनी पनाह में ले लीजिए।

और यह सूरह और उससे पहली वाली सूरह, दोनों को मिलाकर 'मु'अव्विज़तैन' कहा जाता है — पनाह माँगने वाली दो सूरहें। नबी ﷺ हर रात सोने से पहले ये पढ़कर अपने हाथों पर फूँकते और जितना जिस्म तक पहुँच सकता, उस पर फेर लेते। और जब बीमार होते तो भी यही पढ़ा जाता था।

और उक़बा बिन आमिर (रज़ि०) से फ़रमाया: क्या मैं तुम्हें वो आयतें न बताऊँ जो आज तक पढ़ी गई सबसे बेहतरीन हैं? और फिर यही दो सूरहें सुनाईं।

'क़ुल अ'ऊज़ु बि-रब्बिन्-नास — कह दीजिए: मैं पनाह माँगता हूँ इंसानों के रब की।'

बेटा, लफ़्ज़ 'अ'ऊज़ु' का मतलब है: मैं किसी मज़बूत चीज़ से चिमट जाता हूँ, उसकी आड़ में चला जाता हूँ। जैसे कोई बच्चा ख़तरा देखकर अपनी माँ के पीछे छुप जाए — बस वही कैफ़ियत।

और यह लफ़्ज़ अपनी कमज़ोरी का ए'तिराफ़ है। पनाह वही माँगता है जो जानता हो कि वो अकेला इस चीज़ का मुक़ाबला नहीं कर सकता।

तीन नाम, एक दुश्मन

बेटा, अब ग़ौर कीजिए — इस छोटी सी सूरह में अल्लाह ने अपने तीन नाम लिए हैं, और तीनों को 'नास' यानी इंसानों के साथ जोड़ा है।

'रब्बिन्-नास' — इंसानों का रब। यानी उनका मालिक, उनको पैदा करने वाला, उनकी परवरिश करने वाला। वो जो आपको नापसंद चीज़ से बचा सकता है क्योंकि आप उसकी चीज़ हैं।

'मलिकिन्-नास' — इंसानों का बादशाह। यानी वो जिसके पास इख़्तियार है, जिसका हुक्म चलता है। रब परवरिश करता है; मलिक हुक्म देता है।

'इलाहिन्-नास' — इंसानों का मा'बूद। यानी वो जिसके अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं।

बेटा, उलमा ने कहा कि यह तरतीब ख़ुद एक दलील है: पहले वो आपके पालने वाले हैं, फिर आपके बादशाह, और इसी लिए सिर्फ़ वही इस लायक़ हैं कि उन्हीं की बंदगी की जाए।

और सोचिए — इतने सारे नाम सिर्फ़ एक दुश्मन से पनाह माँगने के लिए। उस दुश्मन की ख़तरनाकी का अंदाज़ा इसी से लगाइए।

'मिन शर्रिल्-वस्वासिल्-ख़न्नास — उस वसवसा डालने वाले के शर से जो पीछे हट जाता है।'

बेटा, 'वसवसा' अरबी में उस हल्की, दबी हुई आवाज़ को कहते हैं जो किसी ज़ेवर की

खनक की तरह हो — इतनी धीमी कि सुनने वाले को लगे कि यह उसके अपने दिल की आवाज़ है।

यही उसका सबसे बड़ा हथियार है। वो चीख़ कर नहीं कहता 'ये गुनाह करो'। वो आहिस्ता से आपके अपने लहजे में कहता है: 'थोड़ा सा तो है', 'बाद में तौबा कर लेना', 'सब ही तो करते हैं', 'अब बहुत देर हो चुकी, अब क्या फ़ायदा'।

और 'ख़न्नास' — जो पीछे हट जाता है, दुबक जाता है। बेटा, यह लफ़्ज़ उसकी कमज़ोरी खोल देता है।

उलमा ने फ़रमाया: जब बंदा अल्लाह को याद करता है, वो सिकुड़ कर पीछे हट जाता है; और जब बंदा ग़फ़लत में हो जाता है, वो फिर आगे बढ़ आता है। यानी वो हमला नहीं करता — वो इंतिज़ार करता है। उसकी पूरी रणनीति आपकी ग़फ़लत के लम्हों पर टिकी हुई है।

बेटा, इसी लिए ज़िक्र की इतनी ताकीद है। ज़िक्र लड़ाई नहीं है — ज़िक्र वो मौजूदगी है जिसमें वो टिक ही नहीं सकता।

सीनों में

'अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्-नास — जो लोगों के सीनों में वसवसा डालता है।'

बेटा, ग़ौर कीजिए: 'सीनों में' — बाहर से नहीं, अंदर से। यह दुश्मन आपके घर का दरवाज़ा नहीं खटखटाता; वो सीधे उस कमरे में बात करता है जहाँ आप ख़ुद रहते हैं।

इसी लिए उस पर पहरा देना मुश्किल है। आपको पता ही नहीं चलता कि यह ख़याल कहाँ से आया — क्योंकि वो आपकी ही आवाज़ में बोलता है।

और बेटा, एक बात जो बहुत लोगों को तसल्ली देती है: अगर आपके दिल में कोई बुरा ख़याल आए और आपको उसका आना बुरा लगे — तो यही आपके ईमान की दलील है। सहाबा ने नबी ﷺ से ऐसे ख़यालों की शिकायत की थी कि उन्हें ज़ुबान पर लाने से भी वो डरते हैं, और आप ﷺ ने फ़रमाया: यही तो साफ़ साफ़ ईमान है। क्योंकि चोर उस घर में घुसता है जिसमें कुछ रखा हो।

'मिनल्-जिन्नति वन्-नास — जिन्नों में से भी और इंसानों में से भी।'

बेटा, और यह आख़िरी जुमला पूरी सूरह को बदल देता है।

वसवसा डालने वाला सिर्फ़ जिन्नों में से नहीं होता। इंसान भी होते हैं जो यही काम करते हैं — वो दोस्त जो आपके इरादे को हल्का कर देता है, वो आवाज़ जो कहती है 'इतना सीरियस क्यों हो रहे हो', वो मशवरा जो आपको आपके उसूल से एक क़दम नीचे उतार देता है, वो कंटेंट जो आपके सीने में बैठकर बोलता रहता है।

बेटा, और इंसानी वसवसा ज़्यादा ख़तरनाक है — क्योंकि उसके साथ चेहरा होता है, मोहब्बत होती है, ता'ल्लुक़ होता है। जिन की बात आप रद्द कर सकते हैं; अपने किसी क़रीबी की बात रद्द करना बहुत मुश्किल है।

इसी लिए यह सूरह दोनों को एक ही साँस में गिनवाती है।

और यहीं किताब पूरी होती है

बेटा, अब पूरी तस्वीर देखिए।

क़ुरआन का आग़ाज़ अल-फ़ातिहा से होता है — जिसमें बंदा कहता है: 'हमें सीधा रास्ता दिखा।'

और क़ुरआन का इख़्तिताम अन-नास पर होता है — जिसमें वही बंदा कहता है: 'उससे बचा लीजिए जो मुझे उस रास्ते से हटाना चाहता है।'

बेटा, यह इत्तिफ़ाक़ नहीं है। किताब की शुरुआत हिदायत माँगने से होती है, और इख़्तिताम उस हिदायत की हिफ़ाज़त माँगने से। क्योंकि रास्ता पा लेना एक चीज़ है, और उस पर जमे रहना दूसरी।

और आख़िरी बात, बेटा। इस पूरी सूरह में आपको कहा क्या गया है? लड़ने को नहीं कहा गया। मुक़ाबला करने को नहीं कहा गया। सिर्फ़ एक चीज़ का हुक्म है: **पनाह माँगो।**

क्योंकि जो दुश्मन आपको देखता है और आप उसे नहीं देखते, उसके ख़िलाफ़ आपकी

अपनी होशियारी काफ़ी नहीं। आपको किसी और की आड़ चाहिए।

बेटा, इसी लिए ये दो सूरहें रात को सोने से पहले पढ़िए, सुबह शाम पढ़िए, और अपने बच्चों को सिखाइए। यह क़ुरआन का आख़िरी तोहफ़ा है — एक दरवाज़ा जो हमेशा खुला रहता है।

इस सूरह से क्या सीखा

1. अल्लाह ने अपनी किताब का इख़्तिताम हुक्म पर नहीं, दुआ पर किया — 'मुझे पनाह में ले लीजिए'।

2. 'अ'ऊज़ु' अपनी कमज़ोरी का ए'तिराफ़ है — पनाह वही माँगता है जो जानता हो कि अकेला नहीं लड़ सकता।

3. एक दुश्मन के लिए अल्लाह के तीन नाम लिए गए — इससे उसकी ख़तरनाकी समझ लीजिए।

4. उसका हथियार चीख़ नहीं, दबी हुई सरगोशी है — आपकी अपनी आवाज़ में।

5. 'ख़न्नास' — वो हमला नहीं करता, इंतिज़ार करता है; उसकी पूरी बिसात आपकी ग़फ़लत पर है। इसी लिए ज़िक्र ही इलाज है।

6. बुरा ख़याल आना और उसका बुरा लगना — यही ख़ालिस ईमान की निशानी है।

7. वसवसा डालने वाले इंसान भी होते हैं — और वो ज़्यादा ख़तरनाक हैं, क्योंकि उन्हें रद्द करना मुश्किल होता है।

या अल्लाह, हमें अपनी पनाह में रखिए, हमारे सीनों की हिफ़ाज़त फ़रमाइए, और हमें उस रास्ते पर जमाए रखिए जो हमने फ़ातिहा में माँगा था। आमीन।